दिल्ली की सुस्ती खा रही है करोड़ों की बिजली

स्लीप मोड में गैजेट्स से करीब 77 करोड़ का नुकसान

पूनम पाण्डे ॥ नई दिल्ली

जरा से आलस की वजह से दिल्ली हर साल करोड़ों रुपये की बिजली बर्बाद कर रही है। गैजेट्स को स्विच से ऑफ न करने की आदत हर महीने बिजली के बिल में इजाफा कर रही है। साथ ही दिनोंदिन बढ़ रही डिमांड के बीच बिजली की बर्बादी अच्छा संकेत नहीं है। मोबाइल के चार्ज हो जाने के बाद भी चार्जर लगा छोड़ देना, टीवी को सिर्फ रिमोट से बंद करना, लैपटॉप को चार्ज पर लगाकर स्लीप मोड में छोड़ देने की आदतें दिल्ली की करीब 195 मेगावॉट बिजली बर्बाद कर रही हैं। यानी हर साल करीब 77 करोड़ रुपये बिजली का नुकसान।

कुछ साल पहले बिजली कंपनी बीएसईएस ने दिल्ली में सर्वे किया था। सर्वे में देखा गया कि लोग छोटी-छोटी बातों को नजरअंदाज करते हैं, जिस वजह से बिजली बर्बाद हो रही है। स्लीप मोड में गैजेट्स हर साल करीब 175 मेगावॉट बिजली चूस रहे हैं। जानकारों का कहना है कि पिछले दो तीन सालों में मोबाइल फोन का इस्तेमाल जबर्दस्त रूप से बढ़ा है। घर के हर सदस्य के पास मोबाइल है। लैपटॉप की संख्या में भी इजाफा हुआ है, लेकिन लोगों की स्विच ऑफ करने की आदत में सुधार नहीं आया है। इस कारण बिजली की बर्बादी बढ़ी है। अब कम से कम हर साल 195 मेगावॉट बिजली बर्बाद हो रही है। अगर एक यूनिट बिजली का खर्च देखें, तो इसका चार्ज 3.95 रुपये है। यानी 195 मेगावॉट बिजली 77 करोड़ रुपये से भी ज्यादा बर्बाद कर रही है। जब एक मोबाइल चार्ज पर लगा होता है और उसकी बैट्री चार्ज हो रही होती है, तो वह 8 वॉट बिजली कंज्यूम करता है। अगर मोबाइल पूरी तरह चार्ज है, तब भी चार्जर लगा है तो 4.5 वॉट बिजली कंज्यूम होती है। चार्जर से मोबाइल हटा लेने पर भी अगर चार्जर ऑन है, तो वह एक वॉट बिजली खींचता है। इसी तरह लैपटॉप स्लीप मोड में 2-3 वॉट बिजली खींचता है। टीवी को अगर सिर्फ रिमोट से बंद किया है, तो वह 13 वॉट बिजली बर्बाद कर रहा होता है। अगर स्टीरियो सिस्टम पूरी तरह बंद नहीं है, तो वह 24.5 वॉट बिजली खींचता है।

एक फैमिली का हिसाब लगाएं, जिसमें चार लोग हैं तो स्लीप मोड गैजेट्स ही काफी बिल बढ़ा देते हैं। चार मोबाइल हर रात चार्जर पर लगाकर छोड़ देते हैं, तो महीने में पांच यूनिट बिजली बर्बाद हो जाती है। घर में दो टीवी हैं और सोते वक्त उन्हें रिमोट से बंद किया है तो महीने में बिजली की करीब 6 यूनिट यह चूस जाता है। हर रोज कुछ घंटे लैपटॉप स्लीप मोड में और दूसरे गैजेट स्लीप मोड में होने पर महीने के बिल में करीब 3 यूनिट और जुड़ जाती हैं यानी हर महीने 14 यूनिट बिजली का अतिरिक्त खर्च देना पड़ता है। हर यूनिट का खर्च 3.95 रुपये है। इस हिसाब से हर महीने के बिल में 55 रुपये बर्बाद बिजली का खर्च और सर्विस चार्ज अलग से देना होता है। साल भर का हिसाब लगाएं, तो वैंपायर पावर करीब 700 रुपये चूस लेती है। बिजली कंपनियां और कई एनजीओ बिजली बचाने के लिए कैंपेन चलाते रहे हैं, पर लगता नहीं कि दिल्ली वालों पर ज्यादा असर हुआ है।

वैंपायर पावर

दो-तीन सालों में मोबाइल का यूज काफी बढ़ा है। लैपटॉप की संख्या में भी इजाफा हुआ है, पर लोगों की स्विच ऑफ करने की आदत में सुधार नहीं आया है।

आलस दे रहा है हेवी बिल

गैजेट्स को स्विच से ऑफ न करने की आदत हर महीने बिजली के बिल में इजाफा कर रही है। इससे करीब 195 मेगावॉट बिजली बर्बाद हो रही है यानी हर साल 77 करोड़ रुपये की बर्बादी।

3.95 रुपये की एक यूनिट

मोबाइल पूरी तरह चार्ज है, तब भी चार्जर लगा है तो 4.5 वॉट बिजली कंज्यूम होती है। चार्जर से मोबाइल हटा लेने पर भी चार्जर ऑन है, तो वह एक वॉट बिजली खींचता है। एक यूनिट का खर्चा है 3.95 रुपए।